वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं.२२४

महावीर जन्मभूमि

कुण्डलपुर भजन संग्रह

रचयित्री
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती माताजी

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर २५०४०४ (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.(०१२३३) ८०१८४, ८०२३६

प्रथम संस्करण	२१ अक्टूबर २००२	मूल्य
२२०० प्रतियां	शरद पूर्णिमा	१०/-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रन्थों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोतः-
परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माता जी

समायोजनः-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

निर्देशनः-
धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी

सम्पादकः-
कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग- ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

किसी ने ठीक ही कहा है-

''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''

अर्थात् माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी अधिक महान हैं।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि युग की आदि में भगवान ऋषभदेव ने अयोध्यानगरी में जन्म लिया था तथा इसी क्रम परम्परा में जैनधर्म के अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने कुण्डलपुर नगरी में जन्म लेकर पिता सिद्धार्थ और माता त्रिशला के जीवन को धन्य कर दिया था। यह कुण्डलपुर नगरी वर्तमान में बिहार प्रान्त के नालन्दा जिले में अवस्थित है।

इसे कलियुग का अभिशाप ही कहा जाये कि आज कुछ इतिहासकार एवं अपने को विद्वान मानने वाले शोधकर्तागण महावीर स्वामी की जन्मभूमि वैशाली में सिद्ध करने का दुष्प्रयास कर रहे हैं। २६०० वर्षों से जो जनता पूरी श्रद्धा-भक्ति से कुण्डलपुर को भगवान महावीर की जन्मभूमि के रूप में पूजती आ रही थी उसे दिग्भ्रमित किया जा रहा है। इन आगमविरुद्ध चेष्टाओं को देखकर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने भगवान महावीर की असली जन्मभूमि ''कुण्डलपुर'' को विकसित करने का संकल्प किया और उन्होंने संघसहित २० फरवरी २००२ को दिल्ली के इण्डियागेट से कुण्डलपुर (नालन्दा-बिहार) के लिए मंगलविहार कर दिया।

मंगलविहार के मध्य जहाँ भी जन्मभूमि कुण्डलपुर की चर्चा होती लोग एक स्वर से यही कहते कि ''हम तो कुण्डलपुर को ही भगवान महावीर की जन्मभूमि मानते हैं, वैशाली का तो हमने नाम ही नहीं सुना''। इस प्रकार भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर थी, है और रहेगी, इसमें कोई संशय नहीं है।

प्रस्तुत पुस्तक ''कुण्डलपुर भजन संग्रह'' में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी ने प्रत्येक भजन में इसी तथ्य की पुष्टि की है। इन भजनों के माध्यम से आप अपने अन्तर्मन को स्वच्छ करने के साथ ही साथ दूसरों की भ्रान्तियों का भी निराकरण करें यह शुभकामना है।

प्रस्तावना

-ब्र. कु. सारिका जैन(संघस्थ)

इस युग के अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हुए हैं जिनके शासनकाल में हम और आप जीवनयापन कर रहे हैं तथा जिनके निर्वाणगमन की स्मृति में वीर निर्वाण सम्वत् प्रारम्भ हुआ वर्तमान में २५२८वाँ वी.नि.सं. चल रहा है।

कितने आश्चर्य की बात है कि उन भगवान महावीर स्वामी के गर्भ से लेकर निर्वाण तक के स्थान आदि विवादित हैं।

सर्वप्रथम गर्भकल्याणक को लें- कुछ लोगों (श्वेताम्बर मान्यता वाले) की मान्यता है कि महावीर का जीव पहले एक देवानन्दा नाम की ब्राह्मणी के गर्भ में आया फिर इन्द्र ने इसे अनुचित समझकर वह जीव क्षत्रिय राजा सिद्धार्थ की रानी त्रिशला के गर्भ में स्थानान्तरित कर दिया। इसी प्रकार कुछ समय पूर्व से कतिपय आधुनिक लोग भगवान महावीर को ''वैशाली के ललना'' कहकर उनकी जन्मभूमि वैशाली में सिद्ध कर रहे हैं जबकि शास्त्रों में स्पष्ट उल्लेख है कि वैशाली भगवान महावीर की ननिहाल थी और यह भी एक बहुत ही सहज बात है कि जब तीर्थंकर बालक गर्भ में आते हैं उसके छह महीने पहले से सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर माता के आंगन में रत्नों की वृष्टि करता है न कि नाना के आंगन में। तीर्थंकर की माता जब सोलह स्वप्न देखती हैं तो प्रातःकाल उन स्वप्नों का फल वे अपने पति से पूछती हैं न कि पिता से। तीर्थंकर जैसे महापुरुष अपने पितृकुल से सम्मान को प्राप्त करते हैं न कि मातृकुल से।

इस प्रकार अनेक तथ्यों से यह पूर्णतया स्पष्ट है कि भगवान महावीर ने कुण्डलपुर में ही जन्म लिया था, वे 'कुण्डलपुर के राजकुमार' थे, न कि वैशाली के।

पुस्तक की रचयित्री प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी तो लोगों को वास्तविकता से परिचित कराते हुये यहाँ तक भी कहती हैं कि ''जिस प्रकार जब बच्चा अपनी माँ से पिता के बारे में पूछता है तो माँ जिसकी ओर उंगली दिखा देती है बच्चा उसी को पिता स्वीकार करता है वह पड़ोसी से अपने पिता की पहचान नहीं करवाता, वैसे ही हमें भी अपनी जिनवाणी माता के अलावा किसी की बात का विश्वास नहीं करना चाहिए इस बात को आर्यिकाश्री ने भजन की पंक्तियों में निबद्ध किया है-

अपने पितु की पहचान तुम्हें।
करवाती है निज मात तुम्हें।।
पहचान पड़ोसी से न पिता की मानी,
यह कहती माँ जिनवाणी।

इसी प्रकार की स्पष्ट भाषा में कई सुन्दर भजनों की रचना करके पूज्य आर्यिकाश्री ने हमें वास्तविकता से परिचित कराकर हमारे ऊपर बड़ा उपकार किया है। इन भजनों को पढ़कर आप भी भक्तिरूपी गंगा में अवगाहन करें, यही मंगल कामना है।

❖❖❖

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थविकास की प्रेरिका

पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद

युग की आदि में जन्में भगवान ऋषभदेव की परम्परा में अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हुये हैं जिन्हें **वीर, वर्धमान, सन्मति, महावीर** और **महतिमहावीर** इन पांच नामों से जाना जाता है।

यह तो सच है कि आज के इस अति आधुनिक युग में बिना संगीत के किसी को भगवन्तों की भक्ति में भी विशेष रुचि नहीं रहती।

मुझे प्रसन्नता है कि मेरी शिष्या आर्यिका चन्दनामती जी समय-समय पर मेरी भावनानुसार अनेक भजन लिखती रहती हैं। जब हम अयोध्या गए तो भगवान ऋषभदेव और अयोध्या से सम्बन्धित सैकड़ों भजन उन्होंने रचे, मांगीतुंगी की ओर विहार होते ही उस सिद्धक्षेत्र की भक्ति में कई भजन लिखे, प्रयाग में **''तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली''** नामक नूतन तीर्थ के प्रति असीम भक्ति भावना से ओतप्रोत होकर वहां की पूजन एवं अनेक भजन रचे तथा और भी कई भजन-चालीसा की रचना उनके द्वारा की गयी है।

अब जब भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ के विकास के लिए हमारा ससंघ मंगलविहार चल रहा है तो चन्दनामतीजी रोज एक नया भजन लिखकर सुनाती हैं, जिसे सुनते ही भक्तसमूह झूम उठता है और कुण्डलपुर के महावीर की जय-जयकार कर उठता है।

अंग्रेजी में विशेष रुचि होने के कारण इन्होंने अंग्रेजी में भी भगवान महावीर की पूजा एवं कई भजन लिखे हैं जो कि वर्तमान समय के लिए बहुत उपयोगी हैं।

आर्यिका चन्दनामती जी इसी प्रकार चिरकाल तक अपनी रचनाओं के माध्यम से पाठकों को भक्ति गंगा में अवगाहन कराती रहें तथा अपने ज्ञान की वृद्धि करती रहें यही मेरा उनके लिए बहुत-२ मंगल आशीर्वाद है।

❖❖❖

पुस्तक की रचयित्री

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

जन्म- १८ मई, सन् १९५८, ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या
वी.नि.सं. २४८४

जन्मस्थान- टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मनाम- कु. माधुरी जैन

माता-पिता- श्रीमती मोहिनी जैन एवं श्री छोटेलाल जैन

लौकिक शिक्षा- हाईस्कूल

धार्मिक अध्ययन- शास्त्री, विद्यावाचस्पति आदि

आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत- सन् १९७१, अजमेर (राज.) में
पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

दो प्रतिमा के व्रत- सन् १९८२, मोरीगेट दिल्ली में

सप्तम प्रतिमा- मार्च सन् १९८७ में

आर्यिका दीक्षा- १३ अगस्त, सन् १९८९ रविवार, हस्तिनापुर में पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के करकमलों से

कार्यकलाप- १८ वर्ष तक पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री रत्नमयी माताजी की छत्रछाया में गुरु वैयावृत्ति एवं स्वाध्याय, चिन्तन, मनन, तपश्चरण एवं धर्मप्रवचन, अध्ययन आदि के साथ ही साथ सतत् साहित्य लेखन्। सन्त-काव्य की परम्परा में राष्ट्रीय स्तर की ख्याति।

वर्तमान में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित षट्खंडागम ग्रन्थ की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद तथा अनेक ग्राम, नगर एवं तीर्थक्षेत्रों पर विहार करते हुये अपने हित-मित वचनामृत से जनकल्याण में निरत और साधना की उच्चतर सीढ़ियों पर सतत आरोहण।

❖❖❖

विषय-सूची

क्र.स.	भजन का नाम	पृ. सं.
१.	तेरी चंदन सी	९
२.	सर्वार्थ के सुत	१०
३.	तू भक्ति करके	११
४.	वीरा तेरे तीरथ	१२
५.	वीर प्रभु! तेरे	१३
६.	चलो कुण्डलपुर चलना है	१४
७.	मत छानो माँ	१५
८.	माता हो त्रिशला	१६
९.	वीर की जन्मभूमि	१७
१०.	महावीर की जन्मभूमि	१८
११.	हैं पांच नाम विख्यात	१९
१२.	जहाँ जन्मे वीर	२०
१३.	माता त्रिशला के लाल	२१
१४.	वीरा की महिमा	२२
१५.	मुनिराज बनके	२३
१६.	मुझे पावापुर जाना है	२४
१७.	महावीर भगवान का	२५
१८.	वीरा मुक्तिपथ में	२६
१९.	जय जय श्री वीर जिन	२७
२०.	महावीरा जन्मे	२८
२१.	वीर जन्मभूमी सच्ची	२९
२२.	कुण्डलपुर तीरथ को	३०
२३.	प्रभु ऋषभदेव महावीर	३१
२४.	महावीर की जन्मजयन्ती	३२
२५.	महावीर के जन्मोत्सव पर	३३
२६.	वीर भज ले तू महावीर	३४
२७.	आओ बच्चों! तुम्हें	३५
२८.	कुण्डलपुर तीर्थ का	३६
२९.	आतम में ध्यान	३७
३०.	निज ध्यान करने	३८
३१.	**Your birth celebration**	३९
३२.	**Prince of kundalpur**	४०
३३.	**we are children**	४१
३४.	**I will go to Pavapur**	४२
३५.	वंदामि वंदामि	४३
३६.	मात पद वन्दन कर लो रे	४४
३७.	शारद माता का रूप	४५
३८.	इस युग की माँ शारदे	४६
३९.	आरती श्री महावीर स्वामी की	४७
४०.	आरती श्री महावीर स्वामी की	४८

ॐ

भजन-१

तर्ज-सज धज कर.....

तेरी चंदन सी रज में, हम उपवन खिलाएंगे।
कुंडलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाएंगे।।
जन्मे जहां खेले जहां, त्रिशला माँ के नन्दन।
उस कुंडलपुर की माटी का, सचमुच कण-कण चन्दन।।
चन्दन सी उस माटी को हम, सिर पर लगाएंगे।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाएंगे।।१।।
सोने का नंद्यावर्त महल, सिद्धारथ जी का था।
मणियों के पलंग पर त्रिशला ने, सपनों को देखा था।।
उन सपनों को सच्चे करके, फिर से दिखाएंगे।
कुण्डलपुर के महावीरा तेरा महल बनाएंगे।।२।।
प्राचीन इक मंदिर प्रभू का, कुण्डलपुर में है।
नालन्दा के नजदीक ''चन्दना'', दर्शन मिलते हैं।।
भावना सभी भक्तों की हम, प्रभु तक पहुँचाएंगे।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाएंगे।।३।।

❖❖❖

भजन-२

तर्ज-चल दिया छोड़ परिवार.....

सर्वार्थ के सुत सिद्धार्थ, की ले बारात, चले वैशाली
कुण्डलपुर के नर नारी ।। टेक०।।
इक राजवधू यहाँ आएगी।
नूतन इतिहास बनाएगी।
यह सोच के खुश सिद्धार्थ की माता प्यारी,
कुण्डलपुर के नर नारी ।। १।।
कुण्डलपुर से बारात चली।
वैशाली के प्रांगण पहुँची।।
वहाँ ब्याही चेटक पुत्री राजकुमारी,
कुण्डलपुर के नर नारी ।। २।।
नृप चेटक की पुत्री त्रिशला।
सिद्धारथ की रानी त्रिशला।।
महावीर को देकर जन्म बनी माँ प्यारी,
कुण्डलपुर के नर नारी ।। ३।।
छब्बिस सौ वर्षों की घटना।
सिद्धार्थ पुत्र महावीर बना।।
वह बना विरागी वीर बाल ब्रह्मचारी,
कुण्डलपुर के नर नारी ।। ४।।
तप कर कैवल्य को प्राप्त किया।
पावापुरि से निर्वाण लिया।
''चन्दना'' सिद्ध बन गये प्रभू सुखकारी,
कुण्डलपुर के नर नारी ।। ५।।

❖❖❖

भजन-३

तर्ज- मैं चंदन बनकर.....

तू भक्ति करके प्रभु की, भवसागर तिर जाये।
तू पूजा करके प्रभु की, खुद पूज्य बन जावे।। तू०।।

पर निन्दा करने से, निज निन्दा होती है।
तू वन्दन करके प्रभु का, खुद वन्दित हो जावे।।१।।

जो छत्र लगाता प्रभु पर, वह छत्रपति बनता है
तू चंवर ढुरा के प्रभु पर, शीतलता पा जावे।। २।।

जो नृत्य करे प्रभु सम्मुख, वह धन्य होता है।
तू गा ले गीत प्रभु के, तो कविवर बन जावे।। ३।।

भगवान न देते हैं कुछ, वे वीतरागी हैं।
तू अपने शुभ कर्मों से, बंधन से छुट जावे।। ४।।

"चन्दनामती" यह मानव, सब कुछ पा सकता है।
तू अपने पुरुषारथ से, खुद जिनवर बन जावे।। ५।।

तू भक्ति करके प्रभु की, भवसागर तिर जाये।
तू पूजा करके प्रभु की, खुद पूज्य बन जावे।।

❖❖❖

भजन-४

तर्ज- बाबुल का ये घर.....

वीरा तेरे तीरथ का, मुझे दर्श जो मिल जावे।
तीरथ के दरश पाकर, मन उपवन खिल जावे।। टेक०।।

वह कुण्डलपुर नगरी, वीरान हुई प्रभु जी।
वह वीरानी लखकर, पत्थर भी पिघल जावे।। वीरा०।।१।।

अब सिद्धायिनि माता, का आसन कांपा है।
उस कम्पन से तीरथ, का रूप बदल जावे।। वीरा०।।२।।

माँ ज्ञानमती को वह, दैवी प्रेरणा मिली।
उस प्रेरणा के बल पर, वह तीरथ बन जावे।। वीरा०।।३।।

जब चरण चले उनके, सचमुच उद्धार हुआ।
उद्धार की श्रेणी में, श्रुतसार भी मिल जावे।। वीरा०।।४।।

यदि रोम रोम मेरा, हो जाए समर्पित प्रभु।
"चन्दना" तभी जीवन, की कलियाँ खिल जावें।। वीरा०।।५।।

❖❖❖

भजन-५

वीर प्रभु!तेरे शासन की, फिर से आज जरूरत है।
क्योंकि यहाँ के मानव में, दिखती दानव की सूरत है।। महावीर.।।

तूने इस भारत का गौरव, दुनिया भर में फैलाया।
सत्य अहिंसा अनेकान्त का, झण्डा जग में लहराया।।

सर्वोदय सिद्धान्तों की प्रगटे, अब सच्ची मूरत है।
क्योंकि यहाँ के मानव में, दिखती दानव की सूरत है।।१।।

माँ त्रिशला पितु सिद्धारथ के, पुत्र भले तुम कहलाए।
लेकिन जन जन के मानस में, तुम सूरज बन कर छाये।।

सिद्धशिला के वासी प्रभु, महावीर की आज जरूरत है।
क्योंकि यहाँ के मानव में, दिखती दानव की सूरत है।।२।।

तू कुण्डलपुर में जन्मा, लेकिन हो गया अजन्मा है।
सत्कर्मों को दिखलाकर, तू तो हो गया अकर्मा है।।

सभी बने ''चन्दना'' वीर सम, युग को यही जरूरत है।
क्योंकि यहाँ के मानव में, दिखती दानव की सूरत है।।३।।

❖❖❖

भजन-६

तर्ज-तीरथ कर लो पुण्य कमा लो.....

चलो कुण्डलपुर चलना है, वीर को वन्दन करना है।
महावीर की जन्मभूमि में, उत्सव करना है।
तीर्थ विकास का प्रथमचरण, कीर्तिस्तम्भ की रचना।
महावीर की सात हाथ, अवगाहन की प्रतिमा।।
वहाँ स्थापित करना है,
जन्मभूमि कुण्डलपुर को अब, फिर से सजना है। चलो---
महावीर की जन्मभूमि में, उत्सव करना है।।१।।
नंद्यावर्त महल प्रभु का, हम फिर से बनाएंगे।
जहाँ वीर खेले थे कभी, वह दृश्य दिखाएंगे।।
तीर्थ को विकसित करना है,
वहीं झुलाओ सब मिल जाकर, प्रभु का पलना है। चलो-
महावीर की जन्म भूमि में, उत्सव करना है।।२।।
ज्ञानमती माताजी की, प्रेरणा मिली सबको।
महावीर की जन्मभूमि अब, जल्दी विकसित हो।।
हमें सहयोगी बनना है,
यही ''चन्दनामती '' सभी, भक्तों से कहना है। चलो-
महावीर की जन्मभूमि में, उत्सव करना है।३।।

❖❖❖

भजन-७

तर्ज-चल दिया छोड़.....

मत छानो माँ का दूध, बनो मजबूत, अटल श्रद्धानी,
यह कहती माँ जिनवाणी।
कलियुग में नहिं तीर्थंकर हैं।
उनके वच विश्व हितंकर हैं।।
उसको समझो साक्षात् जिनेश्वर वाणी,
यह कहती माँ जिनवाणी ।। १।।
पहिले जिन शास्त्रों को पढ़ लो।
उन पर पक्की श्रद्धा कर लो।।
यह ही सम्यग्दर्शन की प्रथम निशानी,
यह कहती माँ जिनवाणी ।। २।।
अपने पितु की पहचान तुम्हें।
करवाती है निज मात तुम्हें।।
पहचान पड़ोसी से न पिता की मानी,
यह कहती माँ जिनवाणी ।। ३।।
ऐसे ही तीर्थ व तीर्थंकर।
जिनवाणी बतलाते गुरुजन।।
नहिं अन्य वचन हो सकते जन कल्याणी,
यह कहती माँ जिनवाणी ।। ४।।
कभी माँ का दूध न छनता है।
क्योंकि वह शुद्ध ही रहता है।।
''चन्दना'' शुद्ध ऐसे ही प्रभु की वाणी,
यह कहती माँ जिनवाणी ।। ५।।

❖❖❖

भजन-८

माता हो त्रिशला के लाल, वीर यहाँ फिर आओ ना।
कुण्डलपुरी के युवराज, वीर यहाँ फिर आओ ना।।
माता के गर्भ आए, सुपने दिखाए-
सोलह सुपने दिखाए।
जन्मे तो इन्द्र आए, उत्सव मनाए
जन्म उत्सव मनाए।।
सिद्धार्थ राजा के लाल, वीर यहाँ फिर आओ ना।
कुण्डलपुरी के युवराज, वीर यहाँ फिर आओ ना।।१।।
धरती पुकारे तुम्हें, हिंसा मिटाओ-
वीर हिंसा मिटाओ।
अपना प्राचीन रूप, फिर से दिखाओ-
वीर फिर से दिखाओ।।
चौबीसवें अवतार, वीर यहाँ फिर आओ ना।
कुण्डलपुरी के युवराज, वीर यहाँ फिर आओ ना।।२।।
विचलित हो राजा प्रजा, तुमको भुलाया-
वीर तुमको भुलाया।
वैभव की होड़ लगा, सब कुछ लुटाया-
वीर सब कुछ लुटाया।।
''चन्दना'' यह कलियुग का राज, वीर यहाँ फिर आओ ना।
कुण्डलपुरी के युवराज, वीर यहाँ फिर आओ ना।।३।।

❖❖❖

भजन-९

तर्ज-कभी प्यासे को पानी.....

वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं,
जन्म उत्सव मनाना सफल क्या रहा?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं,
तो महोत्सव मनाने का फल क्या रहा?
हमने इतिहासकारों की बातें सुनीं,
आधुनिक बातें सुन एक चिन्तन जगा।
शास्त्र की सच्ची बातें बताई नहीं,
उनको ही दोष देने का फल क्या रहा?।।
वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं,
जन्म उत्सव मनाना सफल क्या रहा?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं.....।।१।।
हमने कुण्डलपुरी की परिस्थिति सुनी,
उससे अन्तर्हृदय मानो रोने लगा।
वहाँ हमने जयंती मनाई नहीं,
उनकी जयकार करने का फल क्या रहा?
वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं,
जन्म उत्सव मनाना सफल क्या रहा?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं.....।।२।।
दो चरण ज्ञानमति जी के जब चल पड़े,
कोटि पग फिर तो उस ओर ही चल पड़े।
''चन्दना'' अब बजी है बधाई वहीं,
जन्म उत्सव मनाना सफल हो गया।।
वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं।
जन्म उत्सव मनाना सफल क्या रहा?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं.....।।३।।

❖❖❖

भजन-१०

महावीर की जन्मभूमि का, सब मिल करो विकास।
कुण्डलपुर के कण-कण में, महावीर का दिव्य प्रकाश।।
बोलो रे महावीर की जय, बोलो रे अतिवीर की जय।
बोलो वीर की जय, वर्द्धमान की जय, सन्मतिवीर की जय।।

सभी सुखों का जल मानो, उस कुण्डलपुर में भरा था।
सिद्धारथ का राजमहल, उपवन से सदा हरा था।
देवरचित उस नगरी में, महावीर ने किया निवास।
कुण्डलपुर के कण-कण में, महावीर का दिव्य प्रकाश।।
बोलो वीर की जय.....।।१।।

छब्बिस सदियां बीत गईं, अब पहला अवसर आया।
छब्बिस सौवां जन्मकल्याणक, सारे जग ने मनाया।।
उत्सव और महोत्सव से, फैला प्रभु का साम्राज्य।
कुण्डलपुर के कण-कण में, महावीर का दिव्य प्रकाश।
बोलो वीर की जय.....।।२।।

जन्मोत्सव की अमिट देन, अब जन्मभूमि ने पाई।
गणिनी ज्ञानमती माता ने, नूतन ज्योति जलाई।।
अब कुण्डलपुर सज धजकर, ''चन्दना'' करे नव आश।
कुण्डलपुर के कण-कण में, महावीर का दिव्य प्रकाश।।
बोलो वीर की जय.....।।३।।

❖❖❖

भजन-११

तर्ज-तेरे पांच हुए कल्याण.....

हैं पांच नाम विख्यात तेरे, महावीर वीर अतिवीर प्रभो।
सन्मति एवं प्रभु वर्द्धमान, त्रिशलानन्दन महावीर प्रभो।।

जन्म हुआ कुण्डलपुर नगरी, बहुत रतन वहाँ बरसे थे।
चैत्रसुदी तेरस थी तिथि, जब पितु सिद्धारथ हरषे थे।।
बनी रत्नमयी धरती.....धरती
बनी रत्नमयी धरती तब से, हे त्रिशलानन्दन वीर प्रभो।।
हैं पांच नाम.....।।१।।

पावापुर से मोक्ष पधारे, जल मंदिर वहां लहराया।
अपने प्रभु का पाद प्रक्षालन, करना मानो उसने चाहा।
दीवाली मनी तब से.....तब से,
दीवाली तब से शुरू हुई, हे जगदानन्दन वीर प्रभो।।
हैं पांच नाम.....।।२।।

छब्बीस सौवां जन्ममहोत्सव, सबने मनाया है तेरा।
तेरे उत्सव से ही ''चन्दना'', जग में जिनशासन फैला।
जय जय हो प्रभु तेरी.....तेरी
जय जय हो तेरी युग-युग तक, हे त्रिशलानन्दन वीर प्रभो।।
हैं पांच नाम.....।।३।।

❖❖❖

भजन-१२

तर्ज-जरा सामने तो.....

जहाँ जन्मे वीर वर्द्धमान जी,
जहाँ खेले कभी भगवान जी।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।
कुण्डलपुर में राजा सर्वारथ के सुत सिद्धार्थ हुए।
जो वैशाली के नृप चेटक की पुत्री के नाथ हुए।।
रानी त्रिशला की खुशियां अपार थी,
सुन्दरता की वे सरताज थीं।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।१।।
राजहंस से मानसरोवर जैसे शोभा पाता है।
वैसे ही प्रभुजन्म से जन्मनगर पावन बन जाता है।।
जय जय होती है प्रभु पितु मात की,
इन्द्र गाता है महिमा महान जी।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।२।।
प्रान्तबिहार में नालन्दा के, निकट वही कुण्डलपुर है।
छब्बीस सौवें जन्मोत्सव में, गूंजा ज्ञानमती स्वर है।।
तभी आई घड़ी उत्थान की,
हुई दर्शन से ''चन्दना'' निहाल भी।।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।३।।

❖❖❖

भजन-१३

तर्ज-तेरी नगरी से दूर.....

माता त्रिशला के लाल, कुण्डलपुर के युवराज,
महावीर स्वामी।। टेक०।।
जन्मे वीरा जब तुम, तो इन्द्रों ने भी आकर, रतन बरसाया,
रतन बरसाया-जन्म उत्सव मनाया।
राजा सिद्धारथ ने, खुशी में झूम करके, भण्डार खुलवाया,
भण्डार खुलवाया, सबको दान बंटवाया।
दिन वह बना इतिहास, अहिंसा का बजा नाद,
महावीर स्वामी।।१।।
तुमने वीरा हमको तो, दे दी सारी निधियां, हम सोते ही रहे।
हम सोते ही रहे, निधियां खोते ही रहे।
तेरी जन्मनगरी, न विकसित किया हमने, बस रोते ही रहे,
रोते ही रहे, सब कुछ खोते ही रहे।।
किया कर्तव्य न याद, करते रहे केवल बात,
महावीर स्वामी।।२।।
अब तो घड़ियाँ आईं, जब ज्ञानमती माता की, प्रेरणा मिली
प्रेरणा मिली, उनकी प्रेरणा मिली।
तेरी जन्मनगरी, उस कुण्डलपुरी नगरी में, ज्योति इक जली,
ज्योति इक जली, नई ज्योति इक जली।
''चन्दनामती'' यह बात, सचमुच बनी इतिहास,
महावीर स्वामी।।३।।

❖❖❖

भजन-१४

वीरा की महिमा, सब मिल के गाओ,
खुशियाँ मनाओ, खुशियाँ मनाओ।।
त्रिशला के लाल प्रभु, सन्मति महावीर हैं।
कुण्डलपुरी में जन्में, जिनवर अतिवीर हैं।।
रत्नों की वृष्टि, फिर से कराओ,
खुशियां मनाओ, खुशियां मनाओ।।१।।
जिनके न पाप किंचित, वे ही भगवान हैं।
वीरा के लिए सभी, प्राणी समान हैं।।
वही सर्वोदय शासन, फिर से दिखाओ,
खुशियाँ मनाओ, खुशियाँ मनाओ।।२।।
अपना मकान तो, सब ही बनाते हैं।
लेकिन प्रभु का महल, बिरले बनाते हैं।।
कुण्डलपुरी को सभी, मिलके सजाओ।
खुशियाँ मनाओ, खुशियाँ मनाओ।।३।।
मिश्री का मीठा फल, मिलता प्रभु भक्ति से।
''चन्दनामती'' करो, भक्ती भी शक्ति से।।
शक्ति के बिना अपनी, श्रद्धा दिखाओ।
खुशियाँ मनाओ, खुशियाँ मनाओ।।४।।

❖❖❖

भजन-१५

तर्ज-कभी राम बनके.....

मुनिराज बनके, जिनराज बनके, चले आए, महावीर चले आए।।
कौशाम्बी की है एक घटना।
जहाँ बेड़ियों में जकड़ी थी चन्दना।।
उद्धार करने, संकट टालने उसके, चले आए, महावीर चले आए।।१।।
देखा चन्दना ने जब महावीर को।
आंसू भरकर पुकारा उसने वीर को।।
आवाज सुनके, बंधन काटने उसके, चले आए, महावीर चले आए।।२।।
टूटी बेड़ियाँ चन्दना की तत्क्षण।
ज्यों ही हुआ महावीर का दर्शन।।
वीतराग बनके, उसका भाग्य बनके, चले आए, महावीर चले आए।।३।।
श्रद्धा भक्ति से पड़गाया प्रभु को।
दिया चन्दना ने आहार प्रभु को।।
चमत्कार करने, आहार करने, चले आए, महावीर चले आए।।४।।
गणिनी ज्ञानमती माता ने बताया।
इसी इतिहास को दर्शाया।
चिरस्थाई बनके, तीरथ धन्य करने, चले आए, महावीर चले आए।।५।।
जिला कौशाम्बी में तीर्थ प्यारा।
''चन्दनामती'' प्रभाषगिरी न्यारा।।
उसकी कीर्ति बनके, नूतन तीर्थ बनके, चले आए, महावीर चले आए।।६।।

❖❖❖

भजन-१६

तर्ज-कभी तू.....

मुझे पावापुर जाना है, मुझे जलमन्दिर जाना है,
वहाँ लाडू चढ़ाकर दीवाली का पर्व मनाना है।
जय जय दीवाली हो.....जय जय दिवाली .....।टेक०।।

महावीर प्रभु कर्म नाशकर, मोक्षधाम जब पहुंचे।
पावापुर के जलमंदिर में, देव, इन्द्र सब पहुंचे-देव इन्द्र सब पहुंचे।
उनकी ही यादों में, अब दीप जलाना है।
घर घर में धन लक्ष्मी का, भण्डार भराना है।। मुझे०।।१।।

वह पावापुरी सरोवर, अब तक भी लहर रहा है।
दिल्ली में भी जलमंदिर का उपवन महक रहा है, हाँ उपवन महक रहा है।
प्रेरणा मिली गणिनी , श्री ज्ञानमती जी की।
जिनको वन्दन करती, है भारत की धरती।। मुझे०।।२।।

निर्वाण भूमि वीरा की, मै नमन करूँ श्रद्धा से।
महावीर वीरसंवत्सर, मंगलमय हो सब जग में।
निर्वाण की ही स्मृति में, जो शुरु हुआ भारत से.....जो शुरु....
''चन्दनामती'' सबको, दीवाली मंगल हो।
जीवन में हरक्षण सबके, नव खुशियाँ शामिल हों।। मुझे०।।३।।

❖❖❖

भजन-१७

तर्ज- बाहुबली भगवान का.....

महावीर भगवान का मस्तकाभिषेक,
मस्तकाभिषेक, महामस्तकाभिषेक।
महावीर की जन्मभूमि पर प्रथम बार अभिषेक,
मस्तकाभिषेक.....महावीर.....।टेक०।।

छब्बिस सौ वर्षों पहले, जहाँ नंद्यावर्त महल था।
राजा सिद्धारथ ८रानी त्रिशला जी का आंगन था।।
रतन वहाँ बरसे थे जनम में, माता त्रिशला के आंगन में,
आये थे सौधर्म इन्द्र, हो गये धन्य सिर टेक।। मस्तकाभिषेक।।१।

छब्बिस सौंवे जन्मोत्सव में, अवसर स्वर्णिम आया।
कुण्डलपुर में भक्तों ने, जन्मोत्सव पुनः मनाया।।
भक्ति में भीगे मन सबके, नीर क्षीर जब प्रभु पर बरसे,
सभी वीर को अनिमिष दृग से, देखें बार अनेक।। मस्तकाभिषेक।।२।।

गणिनी माता ज्ञानमती की, मिली प्रेरणा जब से।
वीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, विकसित हुई है तब से।।
सभी ''चन्दना'' शीश झुकाएँ, जन्मभूमि पर रतन लुटाएं,
रतनमयी नगरी हो जावे, यही भावना एक।। मस्तकाभिषेक।।३।।

❖❖❖

भजन-१८

तर्ज-कौन दिशा में .....

वीरा मुक्तिपथ में मिलें, जो मुझे कांटे-२
उन्हें फूल बना दो, अनुकूल बना दो, मेरे वीरा हो,
महावीरा हो।। टेक०।।

सोच लिया जब वीरा तेरे, चरणों की रज लेना है।
तुझको पाने हेतु प्रभो! चाहे कुछ भी पड़े मुझे देना है।।
कुण्डलपुर है जन्म नगरिया, तभी वहां हम जाते।।
वीरा..... ।।१।।

तुमने अपने पथ के शूलों, को भी फूल बनाया था।
राजसुखों को छोड़ सभी, कांटों का पथ अपनाया था।।
बालयति बन ध्यान किया वन, में तुमने प्रभु जाके।
वीरा.....।।२।।

मुझको भी इस नश्वर तन से, अविनश्वर पद पाना है।
इस चंचल दानव मन में, निश्चल प्रभु तुझे बिठाना है।।
यही ''चन्दना'' आशा लेकर, हम तेरे गुण गाते।
वीरा.....।।३।।

❖❖❖

भजन-१९

तर्ज-तुमसे लागी लगन.....

जय जय श्री वीर जिन, हम जपें रात दिन, तेरी माला,
शांत हो जिससे कर्मों की ज्वाला ।। टेक.।।
एक मेंढक ने भी भक्ति करके।
देवपद पाया निज शक्ति करके।।
उसकी श्रद्धा जगी, वीर से लौ लगी, पाप टाला,
शांत हो जिससे कर्मों की ज्वाला।।१।।
राजा श्रेणिक ने तेरी शरण ले।
नरक की आयु भी कम की अपने।।
क्षायिक सम्यक्त्व से, भावी जिनवर बने, भव सुधारा,
शांत हो जिससे कर्मों की ज्वाला।।२।।
चन्दना की कटी बेड़ियाँ थीं।
तुमको आहार दे धन्य वो थी।।
प्रमुख गणिनी बनी, सबकी जननी बनी, एक बाला,
शान्त हो जिससे कर्मों की ज्वाला।।३।।
आज भी शक्ति प्रभु भक्ति में है।
''चन्दनामति'' यही सत्य जग में।।
मुझको भी ज्ञान दो, आत्मविज्ञान दो, हो उजाला,
शान्त हो जिससे कर्मों की ज्वाला।।४।।

❖❖❖

भजन-२०

तर्ज- होली खेलें मुनिराज.....

महावीरा जन्मे, कुण्डलपुर में।
कुण्डलपुर में, सिद्धारथ के घर में-२ ।। महावीरा.।।
कौन से महल में जनम भयो है,
किस माता से तुम जनमे।।महावीरा.।।१।।
नन्द्यावर्त था महल तुम्हारा,
माता त्रिशला से जनमे।। महावीरा.।।२।।
किसके संग खेले थे वीरा,
भोजन कहाँ का किया उनने।। महावीरा.।।३।।
देवबालकों के संग खेले,
स्वर्ग का भोजन किया प्रभु ने।। महावीरा.।।४।।
दीक्षा ले कहाँ ज्ञान हुआ था,
मोक्ष कहाँ पाया प्रभु ने।। महावीरा.।।५।।
ऋजुकूला तट पे ज्ञान हुआ था,
मोक्ष लहा पावापुर में ।। महावीरा.।।६।।
विपुलाचल पर समवसरण बना,
ज्योति वहीं से जलाई प्रभु ने।। महावीरा.।।७।।
वीर भक्ति सब करो ''चन्दना''
उससे ही शक्ति मिलेगी मन में।। महावीरा.।।८।।

❖❖❖

भजन-२१

तर्ज- सौ साल पहले.....

वीर जन्मभूमी सच्ची, कुण्डलपुरी ही है।
सदियों से थी और सदा ही रहेगी।। वीर. ।।

जैनग्रन्थों पुराणों में, सभी मुनियों ने बताया है।
तभी कुण्डलपुरी का नाम, सबके मन समाया है।।
ऋषि-मुनि-कवियों ने भी, गाई उसकी कीर्ति है।
सदियों से थी और सदा ही रहेगी।। १।।

आज कुछ स्वार्थी तत्त्वों ने, करी उसकी उपेक्षा है।
किन्तु अब गणिनी माता ज्ञानमति के मन में इच्छा है।।
प्राचीन नगरी अब यह, बने इक धरोहर है।
सदियों से थी और सदा ही रहेगी।।२।।

वीर के वंशजों! तुम उस, धरा को मत भुलाना अब।
तीर्थयात्रा में कुण्डलपुर, वीर के पास जाना सब।।
राजगिर व पावापुर के, पास वही भूमी है।
सदियों से थी और सदा ही रहेगी।।४।।

❖❖❖

भजन-२२

तर्ज- अच्छा सिला दिया.....

कुण्डलपुर तीरथ को फिर से बचाना है।
असली जन्मभूमि वीर की बचाना है।। टेक.।।

इन्द्र ने यह कुण्डलपुरी नगरी बसाई थी।
दर्शन करने जहाँ सारी स्वर्गपुरी आई थी।।
उसी का अब जीर्णोद्धार करने जाना है।
असली जन्मभूमि वीर की बचाना है।।१।।

कोई अपनी शक्ती अच्छे कामों में लगाते हैं।
कोई बने काम भी बिगाड़ने को आते हैं।।
अपने कर्मों का फल सबको खुद ही पाना है।
असली जन्मभूमि वीर की बचाना है।।२।।

सबको जो तिराता तीर्थ कैसे डूब सकता है।
उसको डुबाने वाला स्वयं ही डूब सकता है।।
तीरथ की भक्ति से अब खुद को तिराना है।
असली जन्मभूमि वीर की बचाना है।।३।।

वैशाली को वीर जन्मभूमि नहीं कहना।
वैशाली को उनकी ननिहाल ही समझना।।
''चन्दना'' सभी को कुण्डलपुर ही जाना है।
असली जन्मभूमि वीर की बचाना है।।४।।

❖❖❖

भजन-२३

तर्ज- कौन दिशा में लेके.....

प्रभु ऋषभदेव महावीर का महोत्सव-२,
सभी मिलकर मनाएँ, सभी खुशियाँ मनाएँ
जय जय कर लें, जय जय करें।। प्रभु०।।

वर्तमान चौबीसी के हैं प्रथम तीर्थंकर वृषभेश्वर।
महावीर स्वामी हैं उनमें से ही अंतिम तीर्थेश्वर।।
इन दोनों के मध्य हुए हैं बाइस प्रभु अतिशय संयुत।। प्रभु.।।१।।

प्रथम और अंतिम दोनों के जन्म चैत्र महिने में हुए।
ऋषभदेव ने ब्याह किया महावीर बालब्रह्मचारि रहे।।
मोक्ष और संसार व्यवस्था का प्रतिपादन किया कुशल।। प्रभु.।।२।।

जन्मदिवस निर्वाण महोत्सव आयोजित जिनवर के करो।
ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली कुछ कर्म करो।।
तभी ''चन्दनामती'' सभी की भ्रान्तधारणा होंगी सफल।। प्रभु.।।३।।

❖❖❖

भजन-२४

तर्ज-जैनधरम के हीरे मोती.....

महावीर की जन्मजयन्ती, मिलकर सभी मनाएं हम।
चौबीसों तीर्थंकर की, वाणी जग में पहुँचाएं हम।। टेक.।।

वीरप्रभु का छब्बिस सौवाँ जन्मकल्याणक अवसर है।
सामाजिक संगठन महोत्सव करने में आवश्यक है।।
प्रथम अहिंसा सदाचार की वाणी खुद अपनाएं हम।
चौबीसों तीर्थंकर की, वाणी जग में पहुँचाएं हम।।१।।

जिन पावन सिद्धान्तों को प्रभु ऋषभदेव ने बतलाया।
अजितनाथ से महावीर तक उन्हें सभी ने अपनाया।
विश्वशांति का सूत्र उन्होंने दिया उसे अपनाएं हम।
चौबीसों तीर्थंकर की, वाणी जग में पहुँचाएं हम।।२।।

त्रिशलानन्दन वीर का शासन आज बना जिनशासन है।
जिओ और जीने दो का ''चन्दना'' जहाँ प्रतिपादन है।।
इस शासन का दर्शन अब सच्चे गुरुओं में पाएं हम।
चौबीसों तीर्थंकर की, वाणी जग में पहुँचाएँ हम।।३।।

❖❖❖

भजन-२५

तर्ज-जैन धरम के हीरे मोती.....

महावीर के जन्मोत्सव पर, रतन लुटाओ गली गली।
आया है यह स्वर्णिम अवसर, धूम मचाओ गली गली।। टेक.।।

रतन लुटाने वाला मानव, धनकुबेर कहलाएगा।
इस भव में धनहीन भले हो, धनपति वह बन जाएगा।।

मन खुश कर लो रतन बांटकर, नाचो गाओ गली-गली।
आया है.....।।१।।

हिंसा के इस ताण्डव युग में , कुछ तो शांती आएगी।
राम कृष्ण महावीर की धरती, अब कुछ क्रान्ती लाएगी।।

जग की सारी भ्रांति हटाकर, ढोल बजाओ गली गली।
आया है.....।।२।।

इन रत्नों को जड़कर अपने, आभूषण बनवा लेना।
स्वस्थ निरोगी जीवन में फिर, सदाचार अपना लेना।।

मानव तन अनमोल रतन, यह गाते जाओ गली-गली।
आया है.....।।३।।

कुण्डलपुर का वीर लाडला, त्रिशलानन्दन महावीरा।
सिद्धारथ के पुत्र जैन शासन के सूरज प्रभु वीरा।।

करो ''चन्दना'' उनका उत्सव, जय जय गाओ गली-गली।
आया है.....।।४।।

❖❖❖

भजन-२६

वीर भज ले तू महावीर भज ले, काम सारे बन जाएंगे
वीर भज ले।टेक.।।

क्यों भूला तू महावीर को-२।
महावीरा नैय्या तिरवायेंगे, वीर भज ले.।।१।।

क्यों भूला तू ऋषभदेव को-२।
जीने की कला बतलायेंगे, वीर भज ले.।।२।।

क्यों भूला तू मन्दिर को-२।
मन्दिर ही तुझे तिरवायेंगे, वीर भज ले.।।३।।

क्यों भूला तू सच्चे देव को-२।
वही तो देव बनवाएंगे, वीर भज ले.।।४।।

क्यों भूला तू शास्त्रों को-२।
वे ही तो ज्ञान सिखलाएंगे, वीर भज ले.।।५।।

क्यों भूला तू गुरुओं को-२।
वे ही तो पथ दर्शाएंगे, वीर भज ले.।।६।।

क्यों भूला तू मात-पिता को-२।
वे ही तो तेरा हित चाहेंगे, वीर भज ले.।।७।।

क्यों भूला तू भाई-बहन को-२।
वे ही तो प्रेम सिखलायेंगे, वीर भज ले.।।८।।

मत भूल तू धरम करम को-२।
ये ही तो ज्ञान सिखलाएंगे, वीर भज ले.।।९।।

ले ले ''चन्दना'' तू वीर का शरणा-२।
ये ही तो मोक्ष दिलवाएंगे, वीर भज ले.।।१०।।

❖❖❖

भजन-२७

तर्ज- आओ बच्चों! तुम्हें.....

आओ बच्चों! तुम्हें बतायें, परिचय प्रभु महावीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभु महावीर सा।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो.।। टेक.।।

कुण्डलपुर में पितु सिद्धारथ, माँ त्रिशला से जन्म लिया।
अपने शौर्य पराक्रम से, महावीर नाम को धन्य किया।
वीर बहादुर बनना हो तो, नाम जपो श्रीवीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभु महावीर सा।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो-२।।१।।

प्यारे बच्चों ! तुम्हें देश में, महावीर युग लाना है।
कभी न अण्डा केक पेस्टी, चाकलेट नहिं खाना है।।
दीप जलाओ जन्मदिनों पर, भोजन खाओ खीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभु महावीर सा।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो-२।।२।।

गणिनी माता ज्ञानमती का, सम्बोधन है तुम सबको।
शाकाहारी बनो बनाओ, तुम बच्चों ! हर बालक को।।
बच्चा बच्चा करे ''चन्दना'', नमन सदा महावीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभु महावीर सा।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो-२।।३।।

❖❖❖

भजन-२८

तर्ज-तीर्थ यह महान है, जैनियों की शान है...

कुण्डलपुर तीर्थ का, वीर जन्म भूमि का, सब मिल विकास करो,
जग में प्रकाश भरो।। टेक०।।
संगठन बना लो सब, नींद से जगा दो अब, अपना प्रयास करो
जग में प्रकाश भरो।। टेक०।।
जय जय वर्द्धमान तीरथ है महान, जय जय वर्द्धमान, वीरा है महान
जग में प्रकाश भरो।। टेक०।।
यह नगरी वह तीरथ है जहाँ महावीरा प्रभु जन्मे थे,
जहाँ महावीरा प्रभु जन्मे थे,
यह जिनधर्म की कीरत है, युवराज वीर जहाँ खेले थे,
युवराज वीर जहाँ खेले थे।।
जन्मभूमि ये अजन्मा है देवों ने इसे बसाया था,
देवों ने इसे बसाया था।
महावीरा का किंकर बन, इन्द्र स्वयं यहाँ आया था।
इन्द्र स्वयं यहाँ आया था।
आज वह वीरान है, जैनियों की आन है, उसका विकास करो
जग में प्रकाश भरो। जय जय वर्द्धमान।।१।।
धर्म अहिंसा का पावन, सन्देश जहां से गूंजा था,
सप्देश यहाँ से गूँजा था।।
सिद्धारथ के पुत्र वीर की, पावन रज जहाँ छूना था,
पावनरज जहाँ छूना था।।
उस रज में जब नीरसता का वातावरण पनप आया,
वातावरण पनप आया।।
तब गणिनी माँ ज्ञानमती की मिली, प्रेरणा औ छाया।
मिली प्रेरणा औ छाया।।
''चन्दना'' चलो सभी, अब न तुम रुको कहीं, सत्य का सुवास करो
जग में प्रकाश भरो। जय जय वर्द्धमान।।२।।

❖❖❖

भजन-२९

तर्ज-मनमन्दिर में.....

आतम में ध्यान लगाना है, परमातम मिलेगा।
अपने प्रभू को पाना है, शुद्धातम मिलेगा।।

मन में जो माया व ममता भरी है।
उससे सदा बेचैनी रही है।
चैन की बंसी बजाना है, परमातम मिलेगा।
अपने प्रभू को.....।।१।।

वचनों में कटुता कषाय भरी है।
अच्छे वचन वह कहती नहीं है।।
वाणी को सुन्दर बनाना है, परमातम मिलेगा।
अपने प्रभु को.....।।२।।

काया है नश्वर आत्मा अनश्वर।
आत्मा को ध्याने से होता संवर।।
उसके ही गुण हमें गाना है, परमातम मिलेगा।
अपने प्रभू को.....।।३।।

आत्मा को ध्याओ आत्मा में आओ।
कुछ देर तल्लीन उसमें हो जाओ।।
''चन्दना'' उसे ही सजाना है, परमातम मिलेगा।।
अपने प्रभु को.....।।४।।

❖❖❖

भजन-३०

तर्ज-कभी राम बनके.....

निज ध्यान करने, गुणगान करने, चले आना आतम में चले आना।

बड़ा चंचल है मन इसको बांधो।
बड़ा नश्वर है तन इसको साधो।।
शुद्धात्म भजने, परमात्म भजने, चले आना आतम में चले आना।।१।।

कभी ॐकार में मन रमाओ।
कभी मन में प्रभू को बसाओ।।
मंत्र जाप करने, मन को साफ करने, चले आना आतम में चले आना।।२।।

मन के मंदिर में वेदी बनाओ।
उसपे आतम प्रभू को बिठाओ।।
पूजा पाठ करने, मन एकाग्र करने, चले आना आतम में चले आना।।३।।

भावों का छत्र प्रभु पे लगाओ।
''चन्दना'' श्रद्धा चंवर ढुराओ।।
प्रभु को प्राप्त करने, आतम लाभ वरने, चले आना आतम में चले आना।।४।।

❖❖❖

BHAJAN-31

MUSIC:- Jahan Dal Dal Par.....

Your birth celebration has come in,
our life Lord Mahavira...
Jain Flag hoisted Prabhu Vira Jain....
In our country Bharat had born,
many Tirthankars there.
We are seeing emblems of them,
place to place every where-place...
Your birth place Kundalpur,
we will worship Lord Mahavira
Jain flag hoisted Prabhu vira...(1)
Your honourable Parents name was
King Siddharth and Trishla.
Your greatness from childhood seen,
by whole universe and Indra-by whole universe...
All of human learnt by your
non-violence Lord Mahavira.
Jain Flag hoisted Prabhu Vira..... (2)
Your whole life is inspiration,
for us and all Creatures.
Your holy Doctrines are the best,
for world peace and friendship
for world peace and.....
"Chandnamati" also is praying,
give me peace Mahavira.
Jain Flag hoisted Prabhu Vira.....(3)

❖❖❖

BHAJAN- 32

MUSIC- Kabhi Ram Banke..

Prince of Kundalpur, King of Universe,
Mahavira,O Lord ! Mahavira,
When You came in Garbh of Trishla,
Sixteen dreams seen by Trishla
Felt very happiness, Siddharth Emperor,
Mahavira,O Lord ! Mahavira
When You had born in the Palace,
Indra and Deva came from heaven
On the Meru Mountain, Celebrated Abhishek
Mahavira, O Lord ! Mahavira.
In Young age you took Deeksha,
Gained Kevalgyan after twelwe years,
Then Samavsaran, formed came all persons,
Mahavira, O Lord ! Mahavira.
When Vira attained liberation,
Indra-human came Pawapuri then
Celebrated Diwali, from then begin Diwali,
Mahavira, O Lord ! Mahavira.
Your Shasan is going today also,
we worship to you "Chandna"so
Give me blessing, Prabhuvar give me knowledge,
Mahavira, O Lord ! Mahavira

❖❖❖

BHAJAN-33

MUSIC-Ek Pardeshi Mera Dil.....

We are children of Lord Mahavir
Vira is the father of whole universe,
He is always above the universe,
It's name is Pawan siddhashila
Vir was born in Kundalpur it is
in the Bihar state, Bihar state....
Emperor Siddartha and queen Trishla
were very delighted that day.....
Delighted..
The mankind announced jai jai Mahavir
We are children of Lord Mahavir,
Throne of Saudharam Indra shakes
and four kinds of Deva celebrate, Deva....
Saudharam orders Shachi Indrani, Mahavira....
baby Mahavira from Trishla, Mahavira..
and took the Lord of panduk Shila Vir.
We are children of Lord Mahavira
Vir liberated before twenty five century
and ninteen year. Ninteen..
His instructions are necessary today
also in human life human...
Live & let Live is his main doctrine
we are children of Lord Mahavir
You are twenty fourth teerthankar
It belived by the Jains. By the..
We bow our heads of Mahavir..
lotus feet of Mahavira, of Mahavir..
Chandnamati prays to Mahavir.
We are children of Lord Mahavir

❖ ❖ ❖

BHAJAN-34

MUSIC- Kabhi Too.....

I will go to Pavapur, there is Temple Jalmandir
After offering Ladu I will celebrate Diwali,
Be Happy Diwali, Be Happy Diwali.....
Tirthankar Mahavir attained Liberation from there,
Saudharm Indra and Devas came there from heaven came.....
Men Women were praying, all being were praying
Give me Knowledge Vira,
Give me Knowledge Vira.....(1)
I will go...
The largest lamp series burnt Saudharma Indra then,
That day Kartik Mavas is called Diwali from then.....
called.....
So Jaina tradition, this Diwali function,
Celebrate Diwali in memory Mahavira....(2)
I will go to pavapur.....
Nation is bowing his head to Tirthankar Vira
And remembering his teaching Non-Violence of Vira...
Non.....
Be happiness in world, be peaceful Universe,
"Chandnamati" all of world accept Lord Vira....(3)
I will go pavapur.....
I will go to pavapur, there is temple Jalmandir,
After offering Ladu I will celebrate Diwali....
Be Happy Diwali, Be Happy Diwali.....**Diwali**

❖ ❖ ❖

भजन-३५

तर्ज- परदेशी-परदेशी.....

वंदामि-वंदामि करते हैं हम, चरण में तेरे, माँ चरण में तेरे।
चरणों में तेरे माता, शीश झुकाएं,
शीश झुकाके, करें भक्ति से नमन।। टेक.।।

गणिनी माता ज्ञानमती है, नाम तेरा-नाम तेरा,
ज्ञानामृत वितरित करना है, काम तेरा।
दो सौ ग्रन्थ कहते, तेरे ज्ञान की कहानी।। वन्दामि...।।१।।

जम्बूद्वीप की रचना तेरी, अमर कृती-अमर कृती,
ज्ञानज्योति रथ समवसरण का, प्रवर्तन भी।।
तेरी कर्मठता की ये, सब बनी निशानी।। वन्दामि....।।२।।

तुझमें कुछ ऐसा सम्मोहन, है माता-है माता,
भक्त तेरे सम्मुख आ तुझमें, रम जाता।।
तेरी शान्तमुद्रा, सबके लिए है कल्याणी।। वन्दामि..।।३।।

हर दिन नया तेरे जीवन का, होता है-होता है,
नित्य नई निर्माण प्रेरणा, देता है।।
''चन्दना'' सृजन की, तेरी खिरती है वाणी।। वन्दनामि..।।४।।

❖❖❖

भजन-३६

तर्ज- चाँद मेरे आजा रे.....

मात पद वन्दन कर लो रे-२
सच्चे सुमन से, भक्ति कुसुम से, अर्पित करो अंजलियाँ।। मात.।।
इस पावन वसुन्धरा ने, जब ब्राह्मी माता मांगी।
तब ज्ञानमती माता ने, आ उनकी प्रथा संभाली।।
मात गणिनी को नम लो रे-२,
सच्चे सुमन से, भक्ति कुसुम से, अर्पित करो अंजलियाँ।।१।।
नवमार्ग बनाने वाले, होते हैं बिरले प्राणी।
उस पथ पर चलकर फिर तो, बन जाते कितने ज्ञानी।।
ज्ञानपथ वन्दन कर लो रे-२,
सच्चे सुमन से, भक्ति कुसुम से, अर्पित करो अंजलियाँ।।२।।
साहित्य सृजन के द्वारा, तुमने इतिहास बनाया।
शुभ ज्ञानज्योति के द्वारा, जग में प्रकाश फैलाया।।
ज्ञान की ज्योति नम लो रे-२,
सच्चे सुमन से, भक्ति कुसुम से, अर्पित करो अंजलियाँ।।३।।
तेरी इस त्याग प्रथा में, कितनी बालाएँ आईं।
आर्यिका परम्परा ने, क्वाँरी कन्याएँ पाईं।।
बालसति पद में नम लो रे-२,
सच्चे सुमन से, भक्ति कुसुम से, अर्पित करो अजंलियाँ।।४।।
पर्वत व नदी से ऊँचे, विस्तृत आदर्श तुम्हारे।
''चन्दनामती'' हो जावें, तुम जैसे भाव हमारे।।
भाव से वन्दन कर लो रे-२,
सच्चे सुमन से, भक्ति कुसुम से, अर्पित करो अंजलियाँ।।५।।

❖❖❖

भजन-३७

तर्ज-मनिहारों का रूप.....

शारद माता का रूप दिखाया,
ज्ञान का तूने अलख जगाया।। टेक.।।
दीक्षा लेती न थीं क्वांरी कन्या यहाँ,
बीसवीं सदि में तुमने प्रथम पद लिया।
ज्ञानमति नाम तब तूने पाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.।। १।।
कोई साहित्य रचना न की साध्वी ने,
सैकड़ों ग्रन्थ अब रच दिए मात ने।
कुन्दकुन्द का पथ दरशाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.।। २।।
जैन भूगोल रचना नहीं थी कहीं,
मात्र प्राचीन ग्रन्थों में वह थी कही।
जम्बूद्वीप का रूपक दिखाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.।। ३।।
जिनवरों की जनमभूमि विकसित न थीं,
प्रेरणा उनके उद्धार की माँ ने दी।
ऋषभ महावीर नाम गुंजाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.।। ४।।
जैन संस्कृति की तू इक धरोहर है मां,
युग युगों तक जिए तू कहें ''चन्दना''।
धरती चाहे सदा तेरी छाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.।। ५।।

भजन-३८

तर्ज- फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।। टेक.।।
महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-२
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....।।१।।
तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जम्बूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-२
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....।।२।।
गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चन्दना'' इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-२
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....।।३।।

❖❖❖

आरती श्री महावीर स्वामी की

तर्ज - तन डोले.....

जय वीर प्रभो, महावीर प्रभो की, मंगल दीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।टेक.।।

सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभू जी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महिने तक कुबेर ने, बहुत रतन बरसाए ।। प्रभूजी.।।
कुण्डलपुर की, जनता हरषी, प्रभु गर्भागम कल्याण पे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।१।।

धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहाँ प्रभु लीना ।
चैत्र सुदी तेरस के दिन वहाँ, इन्द्र महोत्सव कीना ।। प्रभू जी.।।
काश्यप कुल के, भूषण तुम थे, बस एकमात्र अवतार थे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।२।।

यौवन में दीक्षा धारण कर, राज-पाट सब त्यागा ।
मगशिर असित मनोहर दशमी, मोह अंधेरा भागा ।। प्रभू जी. ।।
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिये मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।३।।

शुक्ल दशमि वैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था ।। प्रभू जी.।।
तब दिव्यध्वनि, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।४।।

पावापुरि सरवर में जाकर, योग निरोध किया था।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था ।। प्रभू जी.।।
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।५।।

वर्द्धमान, सन्मति, अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो।
कहे 'चन्दनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योति भर दो ।। प्रभू जी.।।
अतिशयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।६।।

❖❖❖

आरती श्री महावीर स्वामी की

ॐ जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो।।
ॐ जय महावीर प्रभो।।

सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी।
बाल ब्रह्मचारी व्रत, पाल्यौ तपधारी।। १।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

आतम ज्ञान विरागी, सम दृष्टि धारी।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी।। २।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

जग में पाठ अहिंसा, आपहि विस्तार्यो।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचार्यो।। ३।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

इह विधि चाँदनपुर में, अतिशय दरशायो।
ग्वाल मनोरथ पूर्‌यो, दूध गाय पायो।। ४।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

प्राणदान मंत्री को, तुमने प्रभु दीना।
मन्दिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना।। ५।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी।
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी।। ६।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर आवै।
होय मनोरथ पूरण, संकट मिट जावै।। ७।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

निशि दिन प्रभु मंदिर में, जगमग ज्योति जरै।
'हरि प्रसाद' चरणों में, आनन्द मोद भरै।। ८।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

❖❖❖